www.gujaratstudy.com

SC

(22) SEAT No._____ No. of Printed Pages : 2

SARDAR PATEL UNIVERSITY

B. A [1 SEMESTER] EXAMINATION

Tuesday,14th November, 2017

10 Am--1.Pm

UAO1CHLT01-Hindi-1-आधुनिक हिन्दी काव्य (रश्मिरथी)

कुल गुण : ७०

प्र. १ ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :(किन्हीं तीन)। (१५)

१) तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतला के,
पाते हैं जग में प्रशस्ति अपना करतब दिखला के।
हीन मूल की ओर देख जग गलत कहे या ठीक,
वीर खींचकर ही रहते हैं इतिहासों में लीक।

२) नहीं खिलते कुसुम मात्र राजाओं के उपवन में,
अमित बार खिलते वे पुर से दूर कुंज कानन में।
समझे कौन रहस्य प्रकृति का बड़ा अनोखा हाल,
गुदड़ी में रखती चुन-चुनकर बड़े कीमती लाल।

३) 'जाति! हाय री जाति!' कर्ण का हृदय क्षोभ से डोला,
कुपित सूर्य की ओर देख वह वीर क्रोध से बोला।
जाति-जाति रटते, जिनकी पूँजी केवल पाखण्ड,
मैं क्या जानूँ जाति? जाति हैं ये मेरे भुजदंड।

४) है कौन विघ्न ऐसा जग में, टिक सके वीर नर के मग में?
खम ठोक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।

५) वह करतब है यह कि शूर जो चाहे कर सकता है,
नियति भाल पर पुरुष पाँव निज बल से धर सकता है।
वह करतब है यह कि शक्ति बसती न वंश या कुल में,
बसती है वह सदा वीर पुरुषों के वक्ष पृथुल में।

प्र.२) 'रश्मिरथी' काव्य के आधार पर कर्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए। (२०)

अथवा

प्र.२ टिप्पणी लिखिए।

१) 'रश्मिरथी' का कलापक्ष।

२) 'रश्मिरथी' का अन्त।